बाल विकास के सिद्धांत

इस अध्याय के महत्वपूर्ण बिन्दुओं का वर्णन निम्नलिखित रून में स्पष्ट किया जा सकता है,

1. बाल विकास में सदैव प्रगतिशील क्रियाओं का समावेश किया जाता है,
2. बाल विकास के सिद्धांतों में उपयोगी लक्ष्यों एवं क्रियाओं को प्रमुख स्थान दिया जाता है,
3. बाल विकास के सिद्धांत बालकों के विकास को समसामयिक एवं आधुनिक बनाने का प्रयास सकरते हैं,
4. विकास की प्रक्रिया प्राकृतिक, सरल एवं स्वाभाविक विकास के सिद्धान्तों पर आधारित होती है,
5. विकास की प्रक्रिया किसी एक स्थान पर सम्पन्न न होकर सार्वभौमिक रूप से सम्पन्न होती है अतः इसमें सार्वभौमिकता के सिद्धान्त का अनुकरण किया जाता है,
6. बाल विकास की प्रक्रिया में व्यक्तिगत भिन्नता का सिद्धान्त कार्य करता है क्योंकि प्रत्येक बालक में विकास गति भिन्न–भिन्न रूपों में होती है–
7. बाल विकास की प्रक्रिया में जन्म से लेकर मृत्यु तक विकास की प्रक्रिया निरन्तरता के सिद्धान्त का अनुकरण करती है,
8. बालक के विकास की प्रक्रिया सिर से पैर की ओर विकास कम के सिद्धांत का अनुसरण करती है,
9. बाल विकास प्रक्रिया में विकास का सम्बन्ध एक दूसरे विकासात्मक पक्षों से होता है, अतः सहसम्बन्ध का सिद्धांत कार्य करता है,

10.बाल विकास की प्रक्रिया में सामान्य से विशिष्ट प्रतिक्रियाओं के सिद्धान्त, समान प्रतिमान के सिद्धान्त तथा वंशानुक्रम एवं वातावरण अनुक्रिया के सिद्धान्त का अनुकरण किया जाता है।

बाल विकास के सिद्धान्त के उद्देश्य, आवश्यकता एवं महत्व–

1. बाल विकास की प्रक्रिया में शिक्षक द्वारा छात्रों के विकास में बाल विकास के सिद्धान्त का अनुसरण किया जाता है जिसके आधार पर यह सर्वांगीण विकास का मार्ग प्रत्येक छात्र के लिए उपलब्ध कराता है,
2. बाल विकास की प्रक्रिया में अभिभावकों द्वारा अपने बालक बालिकाओं के सर्वागीण विकास में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया जाता हैं,
3. प्रधानाध्यापक द्वारा बाल विकास के सिद्धान्तों के ज्ञान के आधार विद्यालय में छात्रों के सर्वागीण विकास की प्रक्रिया के अनुरूप गतिविधियों की व्यवस्था की जाती है,
4. बाल विकास के सिद्धान्तों का प्रमुख उद्देश्य छात्रों का सर्वांगीण विकास करना है,
5. बाल विकास के सिद्धांतों के आधार पर ही अभिभावक अपने बालकों को उनके विकास में सहायता करने में सक्षम होते हैं,

बाल विकास के सिद्धांतों के आधार पर ही शिक्षक, अभिभावक, प्रधानाध्यापक एवं विद्यालय प्रबन्धन समिति की संयुक्त भूमिका द्वारा छात्रों का सर्वांगीण विकास किया जाता है,